DR.MALA KUMARI
ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)
DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY
A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR

B.A –PART 1 PSYCHOLOGY (HONS)
PAPER-1 ,UNIT-7,CANNON-BARD THEORY OF EMOTION

LECTURE-15

संवेग का कैनन-बार्ड सिद्धांत

(cannon-bard theory OF EMOTION)

कैनन-बार्ड सिद्धांत का प्रतिपादन मूलतः कैनन (1927) द्वारा किया गया| बाद में बार्ड (1934) ने इस सिद्धांत का अपने अध्ययनों एवं शोध के आधार पर समर्थन किया |अतः इस सिद्धांत का नाम दोनों मनोवैज्ञानिकों के नाम पर रखा गया जो कैनन-बार्ड सिद्धांत के नाम से मशहूर हुआ |

इस सिद्धांत के अनुसार संवेग का कारण हाइपोथैलमस है जिसका स्थान केंद्रीय तंत्रिका तंत्र के भाग (यानी मस्तिष्क में)प्रमस्तिष्क तथा थैलमस के निचे है |संवेग में हाइपोथैलमस तथा थैलमस के इस महत्व के कारण ही इस सिद्धांत का नाम हाइपोथैलमस सिद्धांत या थैलमिक

सिद्धांत भी रखा गया है |इसे केंद्रीय सिद्धांत भी कहा जाता है क्योंकि इसमे केंद्रीय तंत्रिका तंत्र का अधिक

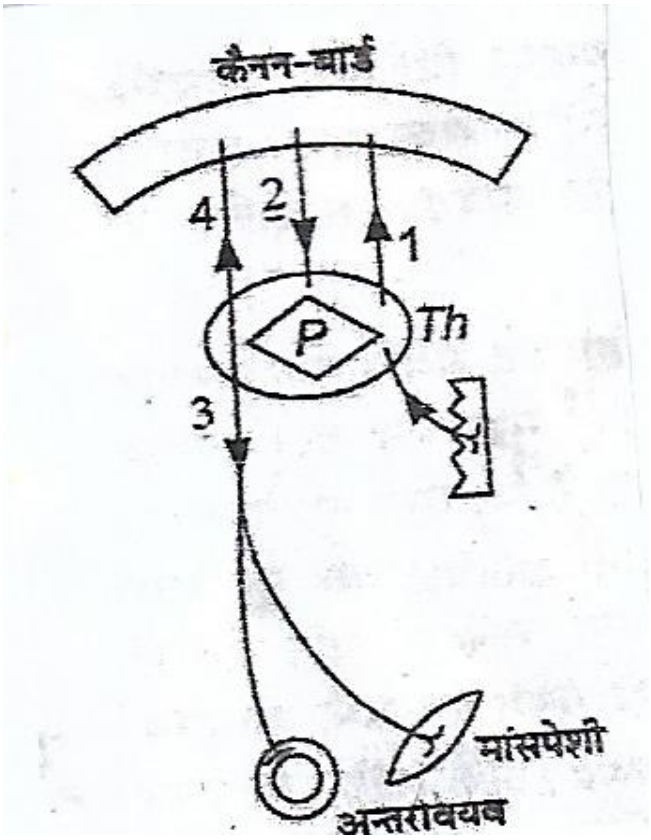

महत्व होता है इस सिद्धांत के अनुसार संवेग उत्पन्न करने वाले उद्दीपक द्वारा ज्ञानेन्द्रियों या ग्राहक के उत्तेजित होने के बाद उसमे तंत्रिका आवेग उत्पन्न होता है जो प्रमस्तिष्क में पथ 1 द्वारा

(जो चित्र में दिखाया गया है)

पहुँचता है |प्रमस्तिष्क में आने के पहले संवेदी तंत्रिका आवेग थैलमस तथा हाइपोथैलमस होकर गुजरते है |इससे हाइपोथैलमस में अभी क्रियाएँ पुर्णतः उत्पन्न नहीं होती है क्योंकि इसके ऊपर प्रमस्तिष्क बल्क का नियंत्रण होता है |जब तंत्रिका आवेग पथ 1 से प्रमस्तिष्क बल्क में

पहुँच कर हाइपोथैलमस की प्रक्रियाओं पर से बल्क के अवरोध को हटाने के लिए पथ 2 से तंत्रिका आवेग भेजता है तो थैलमस या हाइपोथैलमस

पूर्ण रूप से क्रियाशील हो जाता है और एक साथ दो दिशाओं में तंत्रिका आवेग चलता है कुछ ख़ास ख़ास परिस्थिति में पथ 2 द्वारा प्रमस्तिष्क बल्क में अपने आप उत्पन्न होने वाले तंत्रिका आवेग भी हाइपोथैलमस या थैलमस में आते है जिससे वह और भी अधिक तेज़ी से क्रियाशील हो जाता है |जैसे ,कोई पहले की संवेग पूर्ण विचार आचानक व्यक्ति के प्रमस्तिष्क बल्क में आ जाता है तब तंत्रिका आवेग के रूप में यह विचार हाइपोथैलमस में पहुँचता है जिससे वह और भी तेज़ी से क्रिया शील हो जाता है इसके बाद एक ही साथ एक दिशा में पथ 3 द्वारा तंत्रिका आवेग अन्तरांग में तथा हाथ –पैर की मांसपेशियों में पहुँचता है तथा दूसरी दिशा वह है जिसमे ऊपर की और तंत्रिका आवेग हाइपोथैलमस से पथ 4 द्वारा प्रमस्तिष्क बल्क में पहुँचता है |जब तंत्रिका आवेग अन्तरांग तथा हाथ –पैर की मांसपेशियों में पहुँचता है तो इसमें साम्वेगिक व्यवहार उत्पन्न होते है |दूसरी तरफ जब तंत्रिका आवेग प्रमस्तिष्क बल्क में पहुँचता है तो इसमें व्यक्तियों को साम्वेगिक अनुभूति होती है |

इस विवरण से यह स्पष्ट है की साम्वेगिक व्यवहार तथा साम्वेगिक अनुभूति दोनों एक साथ ही होते है न की साम्वेगिक परिवर्तन या साम्वेगिक व्यवहार पर साम्वेगिक अनुभूति निर्भर करती है जैसे जेम्स लांजे सिद्धांत में कहा गया है |मार्गन ,किंग,विस्ज तथा स्कौपलर(1986)ने इस सिद्धांत पर टिप्पणी करते हुए कहा है , “कैनन

–बार्ड सिद्धांत यह कहता है की संवेग में होने वाली शारीरिक प्रतिक्रियाएं एवं अनुभव किया गया संवेग दोनों एक-दुसरे से स्वतंत्र होते है और दोनों की उत्पत्ति एक साथ होती है |कैनन-बार्ड सिद्धांत पर यदि हम ध्यानपूर्वक विचार करे तो यह स्पष्ट हो जायेगा की इस सिद्धांत के अनुसार संवेग उत्पन्न होने में निम्नांकित कदम होते है-

(i)संवेग उत्पन्न होने के लिए उद्दीपक द्वारा ज्ञानेन्द्रियों को उत्तेजित होना अनिवार्य है |

(ii)ज्ञानेन्द्रिय से तंत्रिका आवेग हाइपोथैलमस (या थैलमस)होता हुआ प्रमस्तिष्क बल्क में पहूँचाता है |

(iii)प्रमस्तिष्क बल्क हाइपोथैलमस पर से अपना नियंत्रण कम कर देता है तथा कुछ विशेष परिस्थिति में ऐसे तंत्रिका आवेग को भी हाइपोथैलमस में भेजता है जिसकी उत्पत्ति विकल्प में हुई होती है |

(iv)इसके परिणाम स्वरूप हाइपोथैलमस पूर्णरूप से क्रियाशील हो जाता है |

(v) हाइपोथैलमस के क्रियाशील होने पर तंत्रिका आवेग दो में यानी ऊपर की दिशा में अर्थात प्रमस्तिष्क बल्क की और तथा निचे की दिशा में अर्थात अन्तरांग तथा बाह्य शारीरिक अंगों की मांसपेशियों की ओर एकसाथ जाते है |तंत्रिका आवेग को बल्क में पहुंचाने पर संवेग का अनुभव होता है तथा अंतरांग एवं मांसपेशियों में तंत्रिका आवेग के पहुँचने पर संवेगात्मक व्यवहार या शारीरिक परिवर्त्तन होता है |कैनन (1927)तथा बार्ड (1934)ने कई प्रयोग बिल्ली तथा कुत्ते पर किये है

जिनमे इन पशुओं के हाइपोथैलमस को काट कर निकाल दिया गया था उसमे एक छोटा घाव कर दिया गया ऐसा होने के बाद पशुओं में किसी प्रकार का संवेग होते हुए नहीं पाया गया है |यहाँ तक की जब एक कुत्ते के हाइपोथैलमस को ओपरेशन द्वारा निकाल कर उसके सामने बिल्ली लायी गयी तो कुत्ता शांत भाव से बिना क्रोध दिखलाए चुपचाप रहा | इस तरह के प्रयोग से यह स्पष्ट हो जाता है की हाइपोथैलमस संवेग उद्दगम स्थान है |

इस तरह से हम देखते है की कैनन बार्ड सिद्धांत बहुत हद तक जेम्स-लांजे सिद्धांत के अनुगुणों को दूर कर देता है और संवेग की एक अधिक वैज्ञानिक व्याख्या प्रस्तुत करता है |लेकिन इस विशेस गुण के वाबजूद भी इस सिद्धांत की आलोचना मनोवैज्ञानिको ने की है जो इस प्रकार है :-

(i)कैनन बार्ड सिद्धांत के अनुसार संवेग का स्थान सिर्फ हाइपोथैलमस है परन्तु सच्चाई यह है की संवेग कि उत्पत्ति में हाइपोथैलमस का महत्व विकीर्ण है स्पष्ट नहीं |मास्सरमैन (1943)ने कई प्रयोग कर के यह साबित कर दिया है की सिर्फ हाइपोथैलमस तथा थैलमस के उत्तेजित करने से जो संवेग उत्पन्न होता है, वह स्पष्ट विकीर्ण तंत्रिका तथा साम्वेगिक रूप से अर्थ हीन होता है |

(ii)मास्सरमैन की उपर्युक्त आलोचना से यह भी परोक्ष रूप से स्पष्ट है की संवेग में मस्तिष्क के अन्य भाग भी योगदान करते है |ऐसा कहने का आधार यह है की प्रायः हमे संवेग की अनुभूति स्पष्ट रूप से होती है |यदि सिर्फ हाइपोथैलमस द्वारा ही संवेग की उत्पत्ति होती है ,तो वह

स्पष्ट होता |किंग तथा मेंयर(1958)एवं व्रेडी (1960)ने एक प्रयोग कर दीखला दिया है की मस्तिष्क के अन्य भाग जैसे लिम्बक तंत्र ,ऐमिगडाला तथा सेप्टल क्षेत्र आदि को उत्तेजित करने पर व्यक्ति में संवेग होते पाया गया है और इन हिस्सों को घायल कर देने से संवेग में कमी हो जाती है |

इन आलोचनाओं के बावजूद भी कैनन बार्ड का सिद्धांत आज एक प्रमुख सिद्धांत है क्योंकि इस सिद्धांत के अनुसार हाइपोथैलमस तथा थैलमस संवेग का उद्गम बिंदु है जो अधिकतर मनोवैज्ञानिको को मान्य है |